भंडार।।४।।

अभंग ६६

(राग: भूप जिल्हा - ताल: त्रिताल)

आठा दिवसा आदित्यवारीं। निघे मार्तंडाची स्वारी।।१।। परोपरी

निघे वाहन। पुढें वाघ्याचें नाचण।।२।। दिवटी बुदली घेउनि करीं।

भक्त गर्जती मल्हारी।।३।। ऐसा आनंद गजर। माणिक उधळी